वेदों में पर्यावरण को अनेक तरह से बताया गया है, जैसे- जल, वायु, ध्वनि, वर्षा, खाद्य, मिट्टी, वनस्पति, वनसंपदा, पशु-पक्षी आदि। जीवित प्राणी के लिए वायु अत्यंत आवश्यक है। प्राणी जगत के लिए संपूर्ण पृथ्वी के चारों ओर वायु का सागर फैला हुआ है।

संवाद है। पृथ्वी अकाल का कारण बताते हुए कहती है,'मेरा आदर और सम्मान करना बन्द कर दिया। अनाचार अब असहनीय हो गया है। पृथ्वी यह भी कहती है, मुझे समतल कीजिए।' वर्षा ऋतु बीत जाने पर भी मेरे ऊपर इन्द्र का बरसाया जल सर्वत्र बना रहे, मेरे ऊपर की आर्द्रता समाप्त न होने पाए। यह आपके लिए मंगलकारी रहेगा।

जनमानस के लिए भागवत जी की इस कथा का सन्देश स्पष्ट है। यह पृथ्वी के पारिस्थितिकीय और पर्यावरणीय पक्ष को और मजबूत करने की ओर संकेत करती है। यह ऐसा भी इशारा करती है जब अनाचार बढ़ता है अर्थात पर्यावरण की दृष्टि के सन्दर्भ में पृथ्वी के साथ अनैतिक व्यवहार होता है। उसके प्रति सम्मान और आदर का भाव समाप्त हो रहा है तो वह अन्न और औषधि देना बन्द कर देती है। पृथ्वी का यह सन्देश एक तरह से पानी रोको अभियान अर्थात जल संरक्षण का ही सन्देश है।

पृथ्वी को 'शक्ति सम्पन्न' बताते हुए भागवत जी में कहा गया है कि जीवन शरीर अथवा मनोवृत्तियों से जितने भी कर्म करता है, उसके साक्षी रहते हैं। पृथ्वी, सूर्य, जल, अग्नि, वायु आदि। इनके द्वारा अधर्म का पता चल जाता है और दंड के पात्र का निर्णय हो जाता है। यह एक अहम सन्देश है। मनुष्य के कर्मों के लिये पृथ्वी सहित प्राकृतिक संसाधनों को 'पर्यवेक्षक' की भूमिका प्रदान की गई है।

नदी गीत है, नदी लय है, नदी नाद है। नदी गति, यति और आरोह-अवरोह है और नदी ही क्यों हर वो प्रकृति प्रदत्त रचना चाहे वो अग्नि हो, वायु हो आकाश हो सूरज, चांद, सितारे या मिट्टी, पेड़ हो वो सभी तो जीवन संगीत है। हजारों वर्षों की यात्राएं इन्ही के सहारे तो जीवन ने की है। पर्यावरण संरक्षण यूं तो हम पीढ़ियों से कर रहे हैं पर कुछ वर्षों से इसे बचना का जो नाटक चला है उससे हमारी जैव विविधता खतरे में आ गई है।

आइए पृथ्वी, जल, अग्नि, अन्तरिक्ष, वायु से बने इस पंचतत्वों से निर्मित इस मानव शरीर से हम शपथ लें।

द्यौ: शान्तिरन्तरिक्ष शान्ति:पृथिवी शान्तिराप: शान्तिरोषधय: शान्ति:। वनस्पतय: शान्तिर्विश्वे देवा: शान्तिर्ब्रह्म शान्ति:सर्वं शान्ति:, शान्तिरेव शान्ति: सा मा शान्तिरेधि॥? शान्ति: शान्ति: शान्ति:॥

हम प्रकृति के संतुलन को बनाए रखने के लिए प्रकृति के समस्त अंगों के साम्यावस्था में बनाए रखेंगे। पृथ्वी संताप न करे, जल से ऊर्जा का, जीव से अंडज का उत्सर्जन होता रहे। मनुष्य का मन ऊर्जा से स्वर ऊष्मा से भरा रहे क्योंकि मन का सृजन अन्न से, प्राण का जल से, और स्वर का ऊष्मा से हुआ है। ये ऊष्मा बची रहे, प्रकृति का मान बने रहे भविष्य में बसंत के लिए तरसना न पड़े इसके लिए जरूरी है कि प्रकृति का सुकून देने वाला ऋतु चक्र न टूटे तभी धरा पुलकित होगी विहग आएंगे तभी तो वासंती गान गाएंगे।

वासंती निशा थीय
विरह-विधुर-प्रिया-संग छोड़
किसी दूर देश में था पवन
जिसे कहते हैं मलयानिल।
आई याद बिछुड़ने से मिलन की वह मधुर बात,
आई याद चांदनी की धुली हुई आधी रात,
आई याद कांता की कम्पित कमनीय गात। (सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला')